किसानों, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों हेतु कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता बढ़ोतरी एवं आय का अतिरिक्त साधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report of one day training program for farmers and front line staff of HPSFD on Productivity enhancement and Additional Income through Agro-Forestry

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केम्पा विस्तार के सौजन्य से 24 जनवरी, 2024 को खेलग, लोंगनी पंचायत, धर्मपुर, जिला-मंडी, हिमाचल प्रदेश में किसानों, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों हेतु कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता बढ़ोतरी एवं आय का अतिरिक्त साधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रशिक्षण सह-समन्वयक ने मुख्य अतिथि श्री अजीत ठाकुर मुख्य अरण्यपाल मंडी, डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, वैज्ञानिकों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता एवं आय बढ़ोतरी के उपायों की जानकारी हितधारकों तक पहुचाना है। **डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-जी**, प्रभागाध्यक्ष विस्तार एवं प्रशिक्षण समन्वयक ने बताया कि संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए है। जिससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते है और इन्हे उगाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। उन्होनें कहा कि सीमित कृषि भूमि कम होने से कृषि वानिकी का महत्व और बढ़ गया है। उन्होंने ने कृषि वानिकी मे औषधीय पौधे उगाने का आग्रह किया ताकि लोग अतिरिक्त आय प्राप्त कर सके। हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से वैज्ञानिक खेती करने कि आवश्यकता है। इसके अलावा उन्होंने किसानों को मिशन लाइफ के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

श्री अजीत ठाकुर, मुख्य वन अरण्यपाल, मंडी वृत, हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की और उन्होंने अपने भाषण में औषधीय पौधों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य को सराहा और हितधारकों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जंगलों में जैव विविधता का संरक्षण जरूरी है। उन्होंने पारिस्थिकी में शीर्ष शिकारी (टॉप प्रीडेटर) के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि चैक डैम आदि बना कर वर्षा के जल को बचा कर भूमि में नमी बढ़ायी जा सकती है। यहाँ के क्षेत्र में पहले खातियाँ, वावड़ियाँ आदि बहुतायत में थी जो पानी की उपलब्धतता के साथ-साथ भूमिगत जल के स्तर में भी सुधार करती है, अतः इनका सरंक्षण जरूरी है, युवा पीढ़ी को इनके महत्व एवं संरक्षण के बारे में अवशय जागरूक करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि औषधीय पौधों की खेती विविधिकरण एवं अतिरिक्त आय के लिए अच्छा विकल्प है। **डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक**, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के ने उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने हेतु किसान पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अधिकतर किसान सीमांत हैं वे कृषि-वानिकी द्वारा अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इस क्षेत्र की भूगोलिकी में मधुमख्खी पालन, ड्रेगन फ्रूट, चन्दन आदि की खेती की बहुत संभावनाएं हैं तथा इसे प्रयोग में ला कर किसान अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं। उन्होंने केंचुआ खाद के विषय में भी प्रशिक्षुओं को जानकारी दी और इसके उत्पादन एवं उपयोग की सलाह दी। इसके अलावा उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित कडु, निहानी, वनककड़ी औषधीय पौधो की उच्च गुणवता वाली पाँच नई किस्म/वेराईटी के बारे में बताया। **डॉ. पवन कुमार वैज्ञानिक-एफ़** ने कृषि वैज्ञानिकी में कीट प्रबंधन एवं रोकथाम के विषय में प्रशिक्षुओं

को बताया। उन्होनें पौधों में कीट और बीमारी के रोकथाम के लिए जैव कीटनाशक का उपयोग बढाने पर बल दिया। **डॉ. अश्वनी तप्वाल, वैज्ञानिक-एफ़**, ने कृषि-वानिकी के वृक्षों में मुख्य रोग और उनका जैविक युक्तियों द्वारा प्रबंधन की जानकारी दी। उन्होनें बताया कि उत्पादकता बढ़ाने हेतु हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक का उपयोग करना लाभदायक है। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित टेक्नोलोजी एवं उदपाद जैसे कि माइकोराइज़ा हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक (हिम अलविवाश एवं हिम वाकोली) तैयार किए है। **डॉ. वनीत जिष्टू, वैज्ञानिक-ई** ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु जैव विविधता की भूमिका से लोगों को अवगत करवाया और कहा कि जैव विविधता का संरक्षण करके ही प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित किया जा सकता है। **डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी** ने औषधीय पौधों का संरक्षण उपयोग और मूल्यवर्धन विषय पर जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने अमृत सरोवर एवं शारी वानिकी के के बारे मे भी बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लोंगनी, धर्मपुर क्षेत्र के 40 प्रतिभागीयों, जिसमे किसान, पंचायत प्रतिनिधि, महिला मण्डल तथा युवा मण्डल के सदस्य, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों ने भाग लिया। अंत में डॉ॰ जोगिंदर चौहान, प्रशिक्षण सह-समन्वयक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद दिया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम
कृषि वानिकी : उत्पादकता बढ़ोतरी एवं आय का अतिरिक्त साधन

Awareness Programme
Mission LiFE

किसानों ने सीखे खेती-बागवानी के गुर

धर्मपुर (मंडी) । हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने कैंपा विस्तार के सौजन्य से धर्मपुर की खेलग, लोंगनी पंचायतों में किसानों और वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों के लिए कृषि-वानिकी उत्पादकता बढ़ोतरी एवं आय का अतिरिक्त साधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने कृषि-वानिकी की ओर से उत्पादकता एवं आय बढ़ोतरी के उपायों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए हैं। इससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते हैं।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने के लिए किसान पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन तकनीक के बारे में बताया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. जोगिंदर चौहान ने औषधीय पौधों का संरक्षण उपयोग और मूल्यवर्धन विषय पर जानकारी दी। संवाद

निर्भय व निष्पक्ष
चम्बा एक्सप्रेस
दैनिक समाचार पत्र
कांगड़ा-चम्बा-कुल्लू-मंड

धर्मपुर की लोंगनी पंचायत में किसानों ने सीखे कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता व आय बढ़ोतरी के गुर

संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल भी किए विकसित

सुशील शर्मा। धर्मपुर-मंडी

भावाअशिप हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केम्पा विस्तार के सौजन्य से बुधवार को खेलग, लोंगनी पंचायत, धर्मपुर, जिला-मंडी, हिमाचल प्रदेश में किसानों, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों हेतु कृषि-वानिकी उत्पादकता बे तिरी एवं आय का अतिरिक्त साधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-जी, प्रभागाध्यक्ष विस्तार एवं प्रशिक्षण कोओर्डिनेटर/ समन्वयक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता एवं आय बे तेरी के उपायों की जानकारी हितधारकों तक पहुचाना है ताकि वो मास्टर ट्रेनर के रूप में जानकारी को अन्य लोगों ते पहुंचाए । इसके अलावा उन्होने कहा कि संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए है । जिससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते है और इन्हे उगाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं । उन्होनें कहा कि सीमित कृषि भूमि कम होने से कृषि वानिकी का महत्व और बे गया है । उन्होने ने कृषि वानिकी मे औषधीय पौधे उगाने का आग्रह किया ताकि लोग अतिरिक्त आय प्राप्त कर स्के। अजीत ठाकुर, मुख्य वन अरण्यपाल, मंडी वृत, हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की और उन्होंने अपने भाषण में औषधीय पौधों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य को सराहा और हितधारकों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जंगलों में जैव विविधता का संरक्षण जरूरी है। पौधों के अलावा पारिस्थिकी में शीर्ष शिकारी (टॉप प्रीडेटर) के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होंने कहा कि चैक डैम आदि बना कर वर्षा के जल को बचा कर भूमि में नमी बे यी जा सकती है । यहाँ के क्षेत्र में पहले खातियाँ, वार्वो यॉं आदि बहुतायत में थी जो पानी कि उपलब्धतता के साथ-साथ भिमिगत जल के स्तर में भी सुधार करती है । उन्होंने जोर देकर कहा कि हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से वैज्ञानिक खेती करने आवश्यकता है । औषधीय पौधों की खेती विविधिकरण एवं अतिरिक्त आय के लिए अच्छा विकल्प है ।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने हेतु किसान पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होने कहा कि अधिकतर किसान सीमांत हैं वे कृषि-वानिकी द्वारा अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं । इस क्षेत्र की भूगोलिकी में मधुमख्खी पालन, ड्रेगन फरूट, चन्दन आदि की खेती की बहुत संभावनाएं हैं, इसे प्रयोग में ला कर किसान अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं । उन्होने केंचुआ खाद के विषय में भी प्रशिक्षुओं को जानकारी दी और इसके उत्पादन एवं उपयोग की सलाह दी । इसके अलावा उन्होने संस्थान द्वारा विकसित कड़ु, निहानी, वनकके ी औषधीय पौधो की उच्च गुणवता वाली पाँच नई किस्म/वेराईटी के बारे में बताया । उन्होने हिमालय क्षेत्र की जे ी बूटियों के स्तर, उपयोग तथा संरक्षण पर भी जानकारी दी और कहा कि क्षेत्र में उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती करके इसे एक स्थायी आय सृजन गतिविधि के रूप में बनाने की बहुत संभावना है। इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है । इसके अलावा प्राकृतिक वास में भी इन्हे सरंक्षित करना होगा । डॉ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने औषधीय पौधों का संरक्षण उपयोग और मूल्यवर्धन विषय पर जानकारी दी । उन्होने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित टेक्नोलोजी एवं उदपाद जैसे कि माइकोराइे ा हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक जैसे कि हिम अलविवाश, हिम वाकोली तैयार किए है । डॉ. पवन कुमार वैज्ञानिक-ऐ , प्रभागाध्यक्ष वन संरक्षण प्रभाग ने कृषि वैज्ञानिकी में कीट प्रबंधन एवं रोकथाम के विषय में प्रशिक्षुओं को बताया । उन्होनें कहा कि हमे पौधों में कीट और बीमारी के रोकथाम के लिए जैव कीटनाशक का उपयोग बढाने पर बल दिया । डॉ. अश्वनी तप्वाल, वैज्ञानिक-ऐ , ने कृषि-वानिकी के वृक्षों में मुख्य रोग और उनका जैविक युक्तियों द्वारा प्रबंधन की जानकारी दी । उन्होनें बताया कि उतपाद्कता बढाने हेतु हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक का उपयोग करना लाभदायक है । डॉ. वनीत जिष्टू, ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु जैव विविधता की भूमिका से लोगों को अवगत करवाया और कहा कि जैव विविधता का संरक्षण करके ही प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित किया जा सकता है । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लोंगनी, धर्मपुर क्षेत्र के 40 प्रतिभागीयों, जिसमे किसान, पंचायत प्रतिनिधि, महिला मण्डल तथा युवा मण्डल के सदस्य, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों ने भाग लिया।

लोंगनी पंचायत, धर्मपुर में किसानों ने सीखे कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता एवं आय बढ़ोतरी के गुर

आवाज जनादेश धर्मपुर-मंडी

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केम्पा विस्तार के सौजन्य से 24 जनवरी, 2024 को खेलग, लोंगनी पंचायत, धर्मपुर, जिला-मंडी, हिमाचल प्रदेश में किसानों, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों हेतु कृषि-वानिकी उत्पादकता बढ़ोतरी एवं आय का अतिरिक्त साधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-जी, प्रभागाध्यक्ष विस्तार एवं प्रशिक्षण कोओर्डिनेटर/समन्वयक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि-वानिकी द्वारा उत्पादकता एवं आय बढ़ोतरी के उपायों की जानकारी हितधारकों तक पहुचाना है ताकि वो मास्टर ट्रेनर के रूप में जानकारी को अन्य लोगों तक पहुंचाए । इसके अलावा उन्होने कहा कि संस्थान ने बागवानी पौधों के साथ औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल उगाने के मॉडल विकसित किए है । जिससे किसान बागवानी फसल के मध्य बचे भाग का उपयोग औषधीय पौधों को उगाने के लिए कर सकते है और इन्हे उगाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं । उन्होनें कहा कि सीमित कृषि भूमि कम होने से कृषि वानिकी का महत्व और बढ़ गया है । उन्होने ने कृषि वानिकी मे औषधीय पौधे उगाने का आग्रह किया ताकि लोग अतिरिक्त आय प्राप्त कर स्के । श्री अजीत ठाकुर, मुख्य वन अरण्यपाल, मंडी वृत, हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की और उन्होंने अपने भाषण में औषधीय पौधों पर संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य को सराहा और हितधारकों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जंगलों में जैव विविधता का संरक्षण जरूरी है। पौधों के अलावा पारिस्थिकी में शीर्ष शिकारी (टॉप प्रीडेटर) के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होंने कहा कि चैक डैम आदि बना कर वर्षा के जल को बचा कर भूमि में नमी बढ़ायी जा सकती है । यहाँ के क्षेत्र में पहले खातियाँ, बावड़ियाँ आदि बहुतायत में थी जो पानी कि उपलब्धतता के साथ-साथ भिमिगत जल के स्तर में भी सुधार करती है । उन्होंने जोर देकर कहा कि हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से वैज्ञानिक खेती करने आवश्यकता है । औषधीय पौधों की खेती विविधिकरण एवं अतिरिक्त आय के लिए अच्छा विकल्प है । हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने उच्च

गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने हेतु किसान पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि अधिकतर किसान सीमांत है वे कृषि-वानिकी द्वारा अपनी आय में वृद्धि कर सकते है । इस क्षेत्र की भूगोलिकी में मधुमख्खी पालन, ड्रेगन फ्रूट, चन्दन आदि की खेती की बहुत संभावनाएं हैं, इसे प्रयोग में ला कर किसान अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं । उन्होंने केंचुआ खाद के विषय में भी प्रशिक्षुओं को जानकारी दी और इसके उत्पादन एवं उपयोग की सलाह दी । इसके अलावा उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित कड़ु, निहानी, वनककड़ी औषधीय पौधों की उच्च गुणवत्ता वाली पाँच नई किस्म/वेराईटी के बारे में बताया । उन्होंने हिमालय क्षेत्र की जड़ी बूटियों के स्तर, उपयोग तथा संरक्षण पर भी जानकारी दी और कहा कि क्षेत्र में उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती करके इसे एक स्थायी आय सृजन गतिविधि के रूप में बनाने की बहुत संभावना है। इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है । इसके अलावा प्राकृतिक वास में भी इन्हे सरंक्षित करना होगा । डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने औषधीय पौधों का संरक्षण उपयोग और मूल्यवर्धन विषय पर जानकारी दी । उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित टेक्नोलोजी एवं उदपाद जैसे कि माइकोराइजा हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक जैसे कि हिम अलविवाश, हिम वाकोली तैयार किए है । डॉ. पवन कुमार वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष वन संरक्षण प्रभाग ने कृषि वैज्ञानिकी में कीट प्रबंधन एवं रोकथाम के विषय में प्रशिक्षुओं को बताया । उन्होनें कहा कि हमे पौधों में कीट और बीमारी के रोकथाम के लिए जैव कीटनाशक का उपयोग बढाने पर बल दिया । डॉ. अश्वनी तप्वाल, वैज्ञानिक-एफ, ने कृषि-वानिकी के वृक्षों में मुख्य रोग और उनका जैविक युक्तियों द्वारा प्रबंधन की जानकारी दी । उन्होनें बताया कि उत्पाद्कता बढाने हेतु हिम मृदा संजीविनी जैव उर्वरक का उपयोग करना लाभदायक है । डॉ. वनीत जिष्टू, ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु जैव विविधता की भूमिका से लोगों को अवगत करवाया और कहा कि जैव विविधता का संरक्षण करके ही प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित किया जा सकता है । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लोंगनी, धर्मपुर क्षेत्र के 40 प्रतिभागीयों, जिसमे किसान, पंचायत प्रतिनिधि, महिला मण्डल तथा युवा मण्डल के सदस्य, वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मियों ने भाग लिया ।

****